International Journal of Applied Research 2017; 3(4): 255-258

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(4): 255-258
www.allresearchjournal.com
Received: 09-02-2017
Accepted: 10-03-2017

डॉ. रामजी पाण्डेय
अतिथि प्राध्यापक भूगोल – शास. महाविद्यालय, अमरपाटन, सतना (म.प्र.), भारत

डॉ. प्रभात कुमार सिंह
अतिथि प्राध्यापक भूगोल – शास. महाविद्यालय, सतना (म.प्र.), भारत

Correspondence
डॉ. रामजी पाण्डेय
अतिथि प्राध्यापक भूगोल – शास. महाविद्यालय, अमरपाटन, सतना (म.प्र.), भारत

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटन का विकास

डॉ. रामजी पाण्डेय एवं डॉ. प्रभात कुमार सिंह

सारांश
पर्यटन मानव जीवन की अभिन्न आवश्यकताओं में से एक महत्वपूर्ण तत्व है। मनुष्य मनोरंजन के लिये नये–नये साधन एवं उपक्रम खोजता है। आर्थिक समृद्धि व्यापारिक एवं औद्योगिक प्रगति मनुष्य की इस प्रवृत्ति को पोषित एवं पल्लवित करते हैं। धन खर्च कर पर्यटन स्थलों की सैर की आकांक्षा रखने वालों को उनके धन का उचित मूल्य मिले इस आवश्यकता के कारण भी पर्यटन स्थलों का विकास एवं व्यवस्थाओं का नवीनीकरण आवश्यक हो जाता है। इन्हीं समस्त बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के ऐतिहासिक विकास को समझा एवं रेखांकित किया जा सकता है।

कूट शब्दः कान्हा, राष्ट्रीय उद्यान, पर्यटन एवं ऐतिहासिक विकास

प्रस्तावना
मानव प्रारंभ से ही भ्रमणशील प्रकृति का रहा है। अपने मूल अस्तित्व के प्रारंभिक दौर में जहाँ वह खानावदोश जीवन व्यतीत करते हुए यहाँ–वहाँ विचरण करता हुआ अपने प्राकृतिक पर्यावरण से परिचित हो रहा था, वहीं उसकी यह भ्रमणशीलता उसे प्रकृति के और निकट लाकर उसमें, वर्तमान सभ्यता के बीज प्रस्फुटित कर रही थी। शनैः–शनैः उसकी इन्हीं क्रियाओं ने उसके ज्ञान में वृद्धि कर उस आदि मानव को वर्तमान सभ्यता के रंगमंच पर आसीन कर दिया। किन्तु व्यक्ति की भ्रमणशीलता आज भी जारी है। पहले वह भ्रमण आखेट के लिये करता था, आज वह मानसिक संतुष्टि, ज्ञान प्राप्ति तथा अर्थ प्राप्ति एवं अन्य विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिये करता है। जब व्यक्ति अपने जीवन की आपाधापी से ऊब जाता है तो अपनी इस नीरसता को सरसता में बदलने के लिये पर्यटन करता है। पर्यटन न केवल मानसिक संतुष्टि प्रदान करता है, अपितु नवीन ज्ञान प्राप्ति और क्षेत्र विकास को भी प्रोत्साहित करता है।

अध्ययन का उद्देश्य
1. पर्यटन के द्वारा उद्यानों एवं अभ्यारण्यों में स्वतंत्र रूप से विचरण करने वाले वन्य प्राणियों के संरक्षण हेतु भावी विकास योजना प्रस्तावित करना।
2. परिस्थितिकी पर्यटन के सामाजिक – आर्थिक एवं प्राकृतिक लाभों से समाज को अवगत कराना।
3. कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटन की संभावनाओं एवं समस्याओं को खोजना तथा आने वाले घरेलू एवं विदेशी पर्यटकों की समस्याओं का पता लगाना।
4. पर्यटन के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को बढ़ावा देना।
5. कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटन उद्योग की कमी को उजागर करना एवं भावी विकास की दिशा प्रदान करने हेतु रणनीति तैयार करना।
6. वन्य जीव पर्यटन का हमारे पर्यावरण, स्वास्थ्य एवं संस्कृति आदि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि
शोध कार्य का निष्पादन क्षेत्रीय सर्वेक्षण द्वारा उपलब्ध प्राथमिक एवं द्वितीय आंकड़ों के प्रयोग द्वारा किया गया है। संपूर्ण अध्ययन तुलनात्मक विश्लेषण विधि द्वारा पूरा किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र परिचय

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान जिसे अब 'कान्हा टाइगर रिजर्व' के नाम से जाना जाता है, केन्द्रीय भारतीय मैदानों की सतपुड़ा पहाड़ियों के पूर्वी क्षेत्र में फैली मैकल की श्रृंखलाओं में अवस्थित है। वह उद्यान मध्य प्रदेश के जबलपुर संभाग के दक्षिण – पूर्व में मण्डला एवं बालाघाट जिले में स्थित है। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान का भौगोलिक विस्तार $22^0 7'$ उत्तरी अक्षांस से $22^0 27'$ उत्तरी अक्षांश एवं $80^0 26'$ पूर्वी देशान्तर से $81^0 3'$ पूर्वी देशान्तर तक है। इसका कुल क्षेत्रफल 1949 वर्ग किलोमीटर है।

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटन का ऐतिहासिक विकास

पर्यटन मानव जीवन की अभिन्न आवश्यकताओं में से एक महत्वपूर्ण तत्व है। पर्यटन चाहे प्रकृति के नैसर्गिक स्वरूपों का हो अथवा मानव निर्मित सौन्दर्य स्थलों का वह मस्तिष्क में एक ऐसी अंतः प्रेरणा उत्पन्न करने का कार्य करता है, जिससे मनुष्य की असीम वेदना का अंत केवल क्षणिक पर्यटन से हो जाता है। पर्यटन सामाजिक तथा सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। अपने दैनिक जीवन की भागम–भाग के बीच कुछ समय मनोरंजन के लिये निकालकर मनुष्य प्रकृति की शरण में अपनी रचनात्मक ऊर्जा को पुनः प्राप्त करने के उद्देश्य से पर्यटन के कार्यक्रम बनाता है। मानव समाज की समग्र सामाजिक आर्थिक, व्यापारिक एवं औद्योगिक प्रगति पर्यटन की प्रगति के कारक बनते हैं। जैसे–जैसे समाज में स्थायित्व बढ़ता है शान्ति एवं सुरक्षा का माहौल बढ़ता है। मनुष्य मनोरंजन के नए–नए साधन एवं उपक्रम खोजता है। आर्थिक समृद्धि व्यापारिक एवं औद्योगिक प्रगति मनुष्य की एक प्रवृत्ति को पोषित एवं पल्लवित करते हैं। ये समस्त कारक पर्यटन स्थलों की स्थापना से लेकर उनके सतत् विकास की कहानी लिखते हैं। क्योंकि आर्थिक रूप से समृद्ध वर्ग ही पर्यटन जैसे खर्चीले अभियान में रूचि रखकर उसकी पूर्ति हेतु सफल प्रयास कर सकता है। और इन्हीं कारणों से विश्व के समस्त पर्यटन स्थलों में सुविधाओं का क्रमिक विकास होता है। वैसे भी बदलते समय के साथ बदलाव आकर्षण के लिये आवश्यक होता है। और परिवर्तन की इच्छा रखने वाला मानव स्वभाव परिवर्तन से स्वाभाविक रूप से आकर्षित होता है। फिर जेब से धन खर्च कर पर्यटन स्थलों की सैर की आकांक्षा रखने वालों को उनके धन का उचित मूल्य मिले इस आवश्यकता के कारण भी पर्यटन स्थलों का विकास एवं व्यवस्थाओं का नवीनीकरण आवश्यक हो जाता है। प्रारंभ में जब कान्हा को राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था तब इसकी स्थिति पर्याप्त नियोजित एवं व्यवस्थित नहीं थी इसलिए यहाँ पर्यटन पर्याप्त विकसित नहीं था। वैसे भी प्रारंभ में इस क्षेत्र को राष्ट्रीय उद्यान घोषित करने का उद्देश्य पर्यटन नहीं बल्कि वन्य जीवों विशेषकर बाघ एवं बारहसिंगा का संरक्षण था। इस क्षेत्र के खुला होने से तथा प्रबंधकीय कमजोरी के कारण पर्यटन कार्य सुरक्षित भी नहीं था। कालान्तर में वर्ष 1955 में जब इस उद्यान में शिकार न केवल पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया गया बल्कि शिकार को दण्डनीय अपराध घोषित किया गया तब इस क्षेत्र में पर्यटन का प्रारंभ हुआ। जब पर्यटन के लिये आम आदमी ने इस क्षेत्र को अपनी रूचि का हिस्सा बनाया तब यहाँ के प्रबंधन द्वारा व्यवस्थाओं को नियंत्रित करके इसे पूर्ण रूप से नियोजित किया गया। वर्ष 1970 के पूर्व इस स्थान पर पर्यटन हेतु आने वाले पर्यटकों के आवागमन, आवास, भोजन एवं भ्रमण की पर्याप्त व बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थी। मगर उसके बाद लगातार किये गये प्रयास के परिणाम स्वरूप व्यवस्थाएँ उपलब्ध करायी गयी हैं। और पर्यटन का तीव्र विकास प्रारंभ हुआ। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटन के ऐतिहासिक विकास को चार भागों में वर्गीकृत कर अध्ययन किया गया है–

1. वर्ष 1933 से 1970 में पर्यटन का विकास
2. वर्ष 1970 से 1980 में पर्यटन का विकास
3. वर्ष 1980 से 1995 में पर्यटन का विकास
4. वर्ष 1995 के बाद पर्यटन का विकास

01) वर्ष 1933 से 1970 में पर्यटन का विकास

वर्ष 1933 के पूर्व यह क्षेत्र शिकार गाह बना रहा जहाँ पर वन्य जीवों के शिकार की खुली छूट थी। वर्ष 1933 में इस क्षेत्र के बंजर घाटी क्षेत्र का 233 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल को अभ्यारण्य के रूप में अधिसूचित किया गया तथा वर्ष 1935 में इसी क्षेत्र के हालोन घाटी क्षेत्र का लगभग 500 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल को अभ्यारण्य के रूप में घोषित किया गया। वर्ष 1943 में बंजर घाटी के 233 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल वाले अभ्यारण का 1937 में घटकर 60 वर्ग कि0मी0 कर दिया गया। वर्ष 1943 में हालोन घाटी वाले अभ्यारण्य को रद्द कर दिया गया। वर्ष 1945 में 250 चीतलों को मारा गया। वर्ष 1949 में बंजर घाटी के अन्तर्गत सरही एवं किसली शिकार खण्डों के लिये परमिट दिया जाना बन्द कर दिया गया। वर्ष 1947 से 1951 के बीच विजयनगर के महाराज कुमार द्वारा 30 बाघों को गोली मारी गयी। जिससे वर्ष 1952 में बंजर घाटी वाले अभ्यारण्य का क्षेत्रफल बढ़ाकर 252 कि0मी0 किया गया। वर्ष 1955 में इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित कर दिया गया तथा इसका क्षेत्र बढ़ाकर 252.97 वर्ग कि0मी0 कर दिया गया। वर्ष 1962 में किसली क्षेत्र को इस उद्यान में मिला लिया गया जिससे इस उद्यान का कुल क्षेत्रफल 318 वर्ग कि0मी0 हो गया। वर्ष 1970 में 128 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र को इसके साथ मिला दिया गया जिससे इस राष्ट्रीय उद्यान का क्षेत्रफल 446 वर्ग कि0मी0 हो गया।[1]

02) वर्ष 1970 से 1980 में पर्यटन का विकास

इस काल के अन्तर्गत वर्ष 1973 में कान्हा राष्ट्रीय उद्यान को बाघ आरक्ष घोषित कर दिया गया। जुलाई 1970 में पूरे भारत देश में बाघों के शिकार को निषिद्ध कर दिया गया। कान्हा इसका अपवाद नहीं था। वर्ष 1974 में हालोन घाटी के सूपखार क्षेत्र का 487.72 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र को अभयारण्य घोषित किया गया। वर्ष 1976 में सूपखार अभ्यारण्य को उद्यान घोषित करके उसे कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में मिला दिया गया जिससे राष्ट्रीय उद्यान का कुल क्षेत्रफल 940 वर्ग कि0मी0 हो गया।[2] वर्ष 1976 में कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के चारों ओर 1005 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल को बफर क्षेत्र की अधिसूचना जारी की गई। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में आने वाले पर्यटकों के आवास एवं भोजन व्यवस्था हेतु 06 आवास गृहों की व्यवस्था की गई जिसमें 02 कान्हा टाईगर रिजर्व द्वारा प्रतिबन्धित थे एवं 04 निजी आवास थे। उद्यान के अन्दर भ्रमण हेतु 20 वाहनों (जिप्सी) की व्यवस्था की गई।

03) वर्ष 1980 से 1995 में पर्यटन का विकास

पर्यटन विकास के इस दशक में वर्ष 1985 में कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में ''लैण्ड ऑफ द टाईगर'' नामक फिल्म निर्मित की गई। वर्ष 1991 में ''पर्यावरण शिक्षा केन्द्र अहमदाबाद एवं यूनाइटेड स्टेट्स नेशनल पार्क सर्विस के वृहद समन्वय के परिणाम स्वरूप कान्हा में बहुआयामी सूचना कार्यक्रम के तहत एक उद्यान संग्रहालय, दो उन्मुखीकरण केन्द्र और विभिन्न प्रकार के प्रकाशनों की स्थापना की गई। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के भीतर बसे 45 वनग्रामों में से 26 वनग्रामों को विस्थापित कर बफर जोन और उसके बाहर बसाया गया।[3] कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में वन्यजीवों एवं उनके संरक्षण हेतु उनके लिये आवास स्थल की व्यवस्था एवं जल श्रोतों का निर्माण किया गया। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटकों के लिये आवास एवं भोजन व्यवस्था हेतु – कान्हा टाईगर रिजर्व द्वारा प्रतिबंधित होटल, मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम (एम0पी0एस0टी0डी0सी0) द्वारा प्रतिबंधित होटल तथा उद्यान के बाहर खटिया एवं मुक्की प्रवेश द्वार के पास निजी होटलों की व्यवस्था एवं विकास किया गया। उद्यान के अन्दर

स्थित पुराने आवास गृहों का आधुनिकीकरण (पक्के) किया गया। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में आने वाले पर्यटकों को वन्यजीव अवलोकन हेतु वाहन (जिप्सी) एवं हाथी की व्यवस्था एवं उनकी संख्या में वृद्धि की गई। उद्यान में प्रशिक्षित गाइडों की व्यवस्था की गई। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान तक पहुँचाने वाले मार्गों को मुख्य मार्गों से जोड़ा गया।

04) वर्ष 1995 के पश्चात् पर्यटन का विकास

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटन विकास के इस दशक में पर्यटन विकास हेतु कई प्रमुख परिवर्तन किये गए। वर्ष 1995 में बंजर एवं हालोन घाटी के 1009 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल का बफर जोन वन मण्डल के वन संरक्षण एवं क्षेत्र संचालक के एकीकृत नियंत्रण में लाया गया। वर्ष 2000 में हालोन घाटी के क्षेत्र का बफर जोन वनमण्डल के अन्तर्गत चिल्पी परिक्षेत्र को छत्तीसगढ़ राज्य को हस्तांतरित किया गया। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान (कोर क्षेत्र) के बाहर बफर जोन में बसाए गए ग्रामों के ग्रामीण से वन मण्डल की सुरक्षा बफर क्षेत्र में पर्यटन विकास हेतु जन सहभागिता प्राप्त करने के उद्देश्य से ईको विकास समितियों का गठन किया गया और वर्तमान में बफर क्षेत्र में बसाए गए ग्रामों में 110 विकास समितियाँ कार्यरत हैं।[4] कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में आने वाले पर्यटकों को प्रकृति का और भी निकट से आनंद उठाने का अवसर प्रदान करने के लिये खटिया तथा मुक्की के निकट मंजी टोला में प्राकृतिक पथ का निर्माण किया गया जिसमें 3.5 कि0मी0 लंबा पैदल पथ तथा 7 कि0मी0 लंबा साइकिल पथ है। इनका उद्देश्य पर्यटकों को पक्षी एवं तितली अवलोकन के साथ–साथ पेड़–पौधों के बारे में भी रोचक जानकारी प्रदान करना है। वर्ष 1996 से वन्य जीवों की गणना हेतु नयी एवं आधुनिक विधि को अपनाया गया। उद्यान तथा उद्यान में पाये जाने वाले वन्य जीवों को आग से बचाने के लिये फायर लाईन का निर्माण किया गया। वर्ष 1995 में कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में आने वाले पर्यटकों के लिये स्थापित किये गए व्याख्यात्मक कार्यक्रम का वर्ष 2005 में आधुनिकीकरण एवं उसे और ज्यादा उन्नत किया गया। उद्यान में पर्यटन विकास के लिये अधोसंरचना विकसित करने और उद्यान के हितधारकों के विकास हेतु निधि विकास की स्थापना की गयी। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में आने वाले विदेशी पर्यटकों को ध्यान में रखते हुये, (ए0सी0) आवास गृहों की सुविधा उपलब्ध करायी गई है।

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटकों का विकास

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में देशी एवं विदेशी पर्यटकों का आगमन इसके स्थापना वर्ष से ही प्रारंभ हो गया था। लेकिन उस समय पर्यटकों के लिये उपलब्ध सुविधाओं का अभाव था जिस कारण पर्यटकों के आव्रजन की प्रगति धीमी थी। लेकिन जैसे – जैसे पर्यटक सुविधाओं का विकास हुआ उद्यान में आने वाले पर्यटकों की संख्या में भी लगातार वृद्धि जारी है। वर्ष 2007 के बाद यहाँ प्रतिवर्ष आने वाले देशी एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या एक लाख से अधिक अंकित होती रही है। जो कि निम्नलिखित सारणी द्वारा स्पष्ट है –

सारणी क्रमांक 1 : कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटक संख्या विकास (1973–2010)

क्र.	वर्ष	भारतीय	विदेशी	कुल
1.	2000	45557	2570	48127
2.	2001	53521	1784	55305
3.	2002	53498	1977	55475
4.	2003	61576	2970	64546
5.	2004	67971	3811	71782
6.	2005	69821	10287	80108
7.	2006	95646	10651	106297
8.	2007	113928	18673	132601
9.	2008	118191	19315	137506
10.	2009	111181	17803	128984
11	2010	133196	20828	154024

श्रोत :– " विकास निधि शाखा'' कार्यालय वन संरक्षक एवं क्षेत्र संचालक कान्हा टाइगर रिजर्व मण्डला

उपर्युक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि कान्हा टाइगर रिजर्व को वर्ष 1973 में बाघ आरंक्ष क्षेत्र घोषित करने के समय से ही देशी एवं विदेशी पर्यटकों का आगमन शुरू हो गया था और उद्यान में पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्धि होती जा रही है। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में वर्ष 2000 से 2010 तक आने वाले पर्यटकों के प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2010 में कान्हा में 48127 पर्यटक आये जिसमें 45557 भारतीय एवं 2570 विदेशी पर्यटक शामिल हैं जिसकी तुलना में वर्ष 2010 में कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में 154024 पर्यटक आये जिनमें 133196 भारतीय एवं 20828 विदेशी पर्यटक शामिल थे। अतः उर्पयुक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में आने वाले पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्धि जारी है।

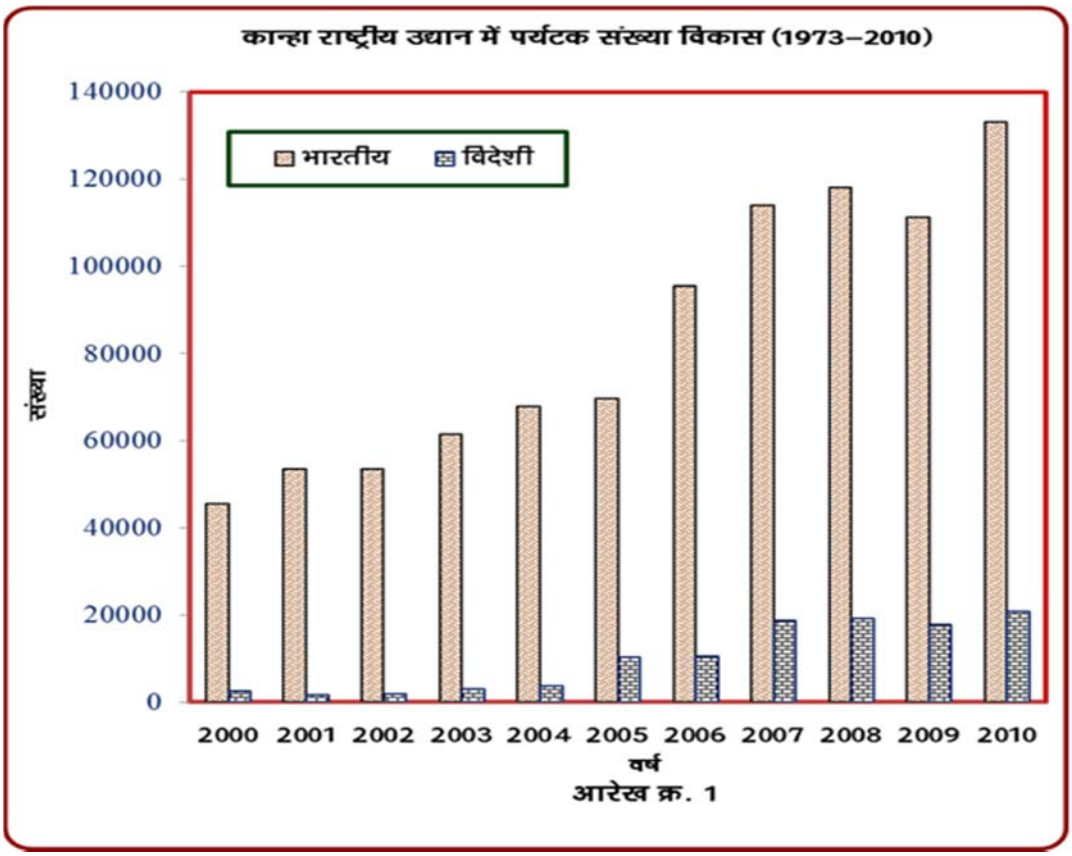

आरेख क्र. 1

निष्कर्ष

पर्यटन जैसे महत्वपूर्ण कार्य के प्रति अब पर्यटकों का दृष्टिकोण भी अत्यधिक परिवर्तित हो चुका है। उनके इस परिवर्तित दृष्टिकोण के पीछे अत्यधिक भौतिकता एवं व्यावसायिकता की प्रवृत्ति भी कही जा सकती है। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटन के विकास और इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर और भी लोकप्रिय एवं व्यापक बनाने की अपार संभावनाएं हैं। विगत आठ दशकों में इस उद्यान में पर्यटन के स्वरूप में हुये प्रशंसनीय परिवर्तन एवं विकास से यह तथ्य इस सच्चाई की ओर रेखांकित करता है कि इस उद्यान में पर्यटन को और भी अधिक आकर्षक और विकसित किया जा सकता है। विगत दशकों में इसका स्वरूप बदलते समय के साथ–साथ पर्याप्त रूप से बदला है और आधुनिक एवं सुविधाजनक हुआ है।

सन्दर्भ

1. गोपाल एवं एच.एस. नेगी – ए नोट ऑन पापुलेशन एस्टीमेशन ऑफ टाइगर्स इन कान्हा टाइगर रिजर्व, 1997.
2. शुक्ला राकेश – बायोडायवर्सिटी कन्जरवेशन विथ स्पेशल रिफ्रेन्स टु कान्हा टाइगर रिजर्व, 1998
3. शुक्ला राकेश खागेश्वर नायक – कान्हा बाघ आरक्षकि झलकियां
4. पवार, एच.एस. – कान्हा राष्ट्रीय उद्यान ए हैंडबुक 1991.